क्या हमसे संपर्क की कोशिश कर रहे हैं एलियन्स?

नई दिल्ली -आठ साल से नक्षत्रविज्ञानी ऐसे रहस्यमय रेडियो संकेतों को लेकर परेशान हैं जो अंतरिक्ष में किसी स्थान से पैदा होते हैं और हम तक पहुँच रहे हैं। इन्हें फास्ट रेडियो बर्स्ट कहा जा रहा है। कुछ वैज्ञानिकों का दावा है कि ये संकेत किसी दूसरे ग्रह के प्राणियों द्वारा भेजे जा रहे हैं। ये संकेत जिस किस्म के हैं, वैसे प्रकृति में अपने आप पैदा नहीं हो सकते। सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलीजेंस (सेटी) नामक संगठन ने इस संभावना का खंडन नहीं किया है कि ये किसी दूसरे ग्रह से आए हुए संकेत हो सकते हैं। कौन जाने किसी ग्रह पर रहने वाले प्राणी हम धरती वालों से संपर्क करने की कोशिश कर रहे हों। हॉलीवुड और बॉलीवुड की कितनी ही फिल्मों में हमने इसी तरह की कल्पना को रजत पट पर घटित होते देखा है! प्रसिद्ध नक्षत्रभौतिकीविद् स्टीफन हॉकिंग तो चेतावनी भी दे चुके हैं कि दूसरे ग्रहों से आने वाले किसी भी संकेत का जवाब देने की कोशिश हम इंसानों को नहीं करनी चाहिए। इस बात की कोई गारंटी नहीं कि इस तरह का संपर्क हम धरतीवासियों के लिए अच्छे परिणाम ही लेकर आएगा।

हालाँकि इंसान ऐसे किसी भी संकेत को पाने के लिए लंबे समय से लालायित रहा है। एक रोमांचक किस्सा किसी अन्य ग्रह से आने वाले उस संकेत का है जो %वाउ% (2*12) के नाम से प्रसिद्ध है। 1960 के दशक में कई रेडियो दूरबीनों को इस काम के लिए तैनात किया गया था कि वे अन्य ग्रहों से आने वाले संभावित रेडियो संकेतों को सुनने की कोशिश करें। बरसों बीत गए लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं आया। बहरहाल, बताया जाता है कि अमेरिका के डेलावायर में ओहायो स्टेट युनिवर्सिटी की बिग इयर रेडियो दूरबीन पर तैनात जेरी आर. एमान ने 15 अगस्त 1977 को एक रेडियो संदेश सुना जो पूरे 72 सैकंड तक चला। बिग इयर रेडियो दूरबीन ने इसे दर्ज भी किया। एमान ने इस संकेत का एक कंप्यूटर प्रिंट आउट लिया और उस पर एक कोने में लिखा वाउ! इसी नाम से यह संदेश प्रसिद्ध हो गया। लेकिन उसके बाद से ऐसा कोई संदेश इस दूरबीन को नहीं मिला। आपको याद होगा, किस तरह %कोई मिल गया% फिल्म में दूसरे ग्रहों के प्राणियों से रेडियो संपर्क किया जाता है। शायद उसकी प्रेरणा राकेश रोशन को इसी घटना से मिली हो।

क्या दूसरे ग्रहों पर प्राणी रहते हैं? यह प्रश्न मानव सभ्यता के सामने मौजूद सबसे चर्चित, सबसे कठिन, सबसे रोमांचक और सबसे पुराने प्रश्नों में से एक है, जो आज भी अनुत्तरित है। इस सवाल पर जितने सकारात्मक मत हैं, उतने ही नकारात्मक भी हैं। न वैज्ञानिकों के बीच इस मुद्दे पर कोई सहमति या मतैक्य है और न ही अंतरिक्षविज्ञानियों में। आम लोगों की तो बात ही छोड़ दीजिए जिनके बीच तरह-तरह की अफवाहें, भ्रांतियाँ और धारणाएँ होना आम बात है। नासा से लेकर सर्न और इसरो तक ने परग्रहीय प्राणियों (एलियन्स) का पता लगाने पर काफी धन, अनुसंधान और ऊर्जा खर्च की है। लेकिन नतीजा आज भी वही है और वह यह कि कोई नतीजा नहीं।

फिल्मी एलियन बनाम असली एलियन!

परग्रहीय प्राणियों की मौजूदगी पर ही नहीं बल्कि वे कैसे दिखते होंगे, इसे लेकर भी काफी जिज्ञासा है। लेकिन उतने ही मतभेद भी हैं। हॉलीवुड और भारतीय फिल्मों में उन्हें कई रूपों में दिखाया गया है, जो काफी हद तक इंसान या जानवर जैसे अंगों और बनावट से युक्त होते हैं। मुंह, हाथ, पाँव, सिर, आँखें, कान आदि आदि। वे सुनते भी हैं और बोलते भी हैं। चलते फिरते भी हैं, भले ही तेज या धीमी रफ्तार से। याद कीजिए कोई मिल गया और पीके जैसी हिंदी फिल्में और यूएफओ, एलियन्स, अटैक ऑफ द मार्शियन्स जैसी हॉलीवुड फिल्में।

दूसरे ग्रहों के जीवों को धरती पर देखे जाने के दावे दर्जनों बार हुए हैं। प्राय: इन परग्रहीय प्राणियों के वाहन की परिकल्पना हमारे अंतरिक्ष यानों से भिन्न, गोलाकार रूप में की गई है, जिन्हें यूएफओ या अनआइडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट कहा जाता है। जहाँ हमारे विमान या वाहन नोंकदार व आयताकार होते हैं, वहीं परग्रहीय प्राणियों के वाहन के रूप में %उड़न तश्तरी% की कल्पना की गई है जिसमें प्राय: पंख नहीं होते। ऐसे वाहनों की आंतरिक इंजीनियरिंग बड़े कौतूहल का विषय है क्योंकि वह उस एअरोनॉटिकल साइंस पर आधारित नहीं दिखती जिसका इस्तेमाल हम धरती पर करते हैं। हालाँकि पक्के तौर पर यह बात कहना मुश्किल है कि ऐसे वाहन होते ही हैं। लेकिन इसका खंडन भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि अनेक लोगों ने अतीत में ऐसे वाहनों को अपनी आँखों से देखने का दावा किया है और कुछ मामलों में तो वायुसैनिक विमानों ने उनका पीछा भी किया है। ये दावे आधुनिक समाज तक सीमित नहीं हैं। पंद्रहवीं सदी में बनाई गई वर्जिन मेरी की एक तसवीर %द मैडोना विद सेंट जियोवानिनो% में भी वर्जिन मेरी के चित्र की पृष्ठभूमि में एक उड़न तश्तरी चित्रित की गई है जिसे एक व्यक्ति और उसका कुत्ता कौतूहल के साथ देख रहे हैं। कुछ संस्कृत ग्रंथों और बाइबल तक में परग्रहीय प्राणियों का जिक्र मिलता है।

परग्रहीय प्राणियों की मौजूदगी पर ही नहीं बल्कि वे कैसे दिखते होंगे, इसे लेकर भी काफी जिज्ञासा है। लेकिन उतने ही मतभेद भी हैं। हॉलीवुड और भारतीय फिल्मों में उन्हें कई रूपों में दिखाया गया है, जो काफी हद तक इंसान या जानवर जैसे अंगों और बनावट से युक्त होते हैं। मुंह, हाथ, पाँव, सिर, आँखें, कान आदि आदि। वे सुनते भी हैं और बोलते भी हैं। चलते फिरते भी हैं, भले ही तेज या धीमी रफ्तार से।

नासा क्यों नहीं उजागर करता सूचनाएँ?

अमेरिका में समय-समय पर यूएफओ को देखे जाने तथा उनका पीछा किए जाने की घटनाओं तथा परग्रहीय प्राणियों से संपर्क करने के नासा के प्रयोगों पर रहस्य का आवरण पड़ा हुआ है। ऐसी बहुत सी सूचनाएँ अमेरिका सरकार की गोपनीय फाइलों में कैद हैं। इनमें से एक में खुद पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर का परग्रहीय जीवों को अनुभव करने का दावा शामिल है। एक अन्य पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन भी इस मुद्दे पर बेबाक राय रखते आए हैं जिनका मानना है कि ऐसे जीवों का अस्तित्व ज़रूर है। हालाँकि दुनिया भर से होने वाली मांग के बावजूद अमेरिका सरकार इन फाइलों को जाहिर करने के लिए तैयार नहीं है। अमेरिका के इस रवैये ने इस धारणा को बल दिया है कि हो न हो मामले में कोई न कोई रहस्य ज़रूर है जिसे छिपाने के लिए अमेरिकी प्रशासन इतनी मशक्कत कर रहा है। शायद उसे आशंका हो कि इन प्राणियों की मौजूदगी की बात लोगों को धरती के भविष्य के प्रति आशंकित कर देगी।

ऐसे ही एक रहस्य का जिक्र नासा की एक पूर्व कर्मचारी महिला जैकी ने पिछले साल किया था। जैकी ने कहा कि 1979 में मंगल ग्रह पर गए वाइकिंग लैंडर से नासा को जो %लाइव% वीडियो मिले उनमें स्पेससूट पहने हुए इंसानों जैसे लोग दिखाई दिए थे। लेकिन नासा ने इन सूचनाओं को दबा दिया। जैकी का दावा है कि उसके अलावा छह और लोगों ने यह वीडियो फुटेज देखा था।